# श्री श्री शचीतनयाष्टकम

श्री श्री शचीतनयाय नमः

1. उज्ज्वल वरण गौरवर देहं विलसित निरवधि राग विदेहं,

त्रिभुवनं पावनं कृपयाः लेशं तं प्रणमामि च श्री शची तनयं ॥

1. गदगद अन्तर भाव विकारं दुर्जन तर्जन नाद विलासं,

भवभय भंजन कारण करुणं तं प्रणमामि च श्री शची तनयं ॥

1. अरुणाम्बर धर चारु कपोलं इन्दु विनिन्दित नखचय रुचिरं,

जल्पित निज गुण नाम विनोदं तं प्रणमामि च श्री शची तनयं ॥

1. विगलित नयन कमल जलधारं भूषण नव रस भाव विकारं,

गति अति मन्थर नृत्य विलासं तं प्रणमामि च श्री शची तनयं ॥

1. चंचल चारु चरण गति रुचिरं मंजीर रंजित पदयुग मधुरम,

चन्द्र विनिन्दित शीतल वदनं, तं प्रणमामि च श्री शची तनयं ॥

1. धृत कटि डोर कमण्डलु दण्डं दिव्य कलेवर मण्डित मण्डं,

दुर्जन कल्मष खण्डन दण्डं तं प्रणमामि च श्री शची तनयं ॥

1. भूषण भूरज अलका वलितं कम्पित विम्बाधर वर रुचिरं,

मलयज विरचित उज्ज्वल तिलकं तं प्रणमामि च श्री शची तनयं ॥

1. निन्दित अरुण कमल दल लोचनं आजानुलम्बित श्री भुज-युगलं,

कलेवर कैशोर नर्तक वेषं तं प्रणमामि च श्री शची तनयं ॥

॥ श्रील सार्वभौम विरचित श्री शचीतनयाष्टकं सम्पूर्णं ॥

# श्री श्री नित्यानन्दाष्टाकम

प्रेमे घूर्णित, नयन पूर्णित, चञ्चल मृदु गति निन्दितं

वदन-मण्डल, चांद निर्मल, वचन अमृत-खण्डितम ।

असीम गुणगणे, तारिले जगजने, मोहे काहे कुरु वञ्चितं

जयति जय, वसु-जाह्नबा-प्रिय, देहि मे स्वपदान्तिकम ॥१॥

मिहिर मण्डल, श्रवणे कुण्डल, गण्डमण्डले दोलितं

किये निरुपम, मालतीर दाम, अंगे अनुपम शोभितम ।

मधुर-मधु-मदे, मत्त मधुकर, चारु चौदिके चुम्बितम

जयति जय, वसु-जाह्नबा-प्रिय, देहि मे स्वपदान्तिकम ॥२॥

आजानुलम्बित, बाहु सुबलित, मत्त-करिवर-निन्दितं

‘’भैया, भैया’’ बोलि, गभीर डाकोइ, करु दश दिक भेदितम ।

अमर किन्नर, नाग-नरलोक, सर्वचित्त सुदर्शितं

जयति जय, वसु-जाह्नबा-प्रिय, देहि मे स्वपदान्तिकम ॥३॥

क्षणे हुहुंकृत, लम्फ ज्हम्प कृत, मेघ-निन्दित-गर्जितं

सिंह-डमरु, क्षीण कटितट, नील-पट्टवास-शोभितम ।

सो पहुं धुनीतीरे, सघने धावै, चरणे भरे मही कम्पितं

जयति जय, वसु-जाह्नबा-प्रिय, देहि मे स्वपदान्तिकम ॥४॥

अवनी-मण्डल, प्रेमे बादल, करलो अवधौत धावितं

तापी दीन-हीन, तार्किक दुर्जन, केहो ना भेलो वञ्चितम ।

श्रीपदपल्लव, मधुर माधुरी, भकत भ्रम सुख पीतं

जयति जय, वसु-जाह्नबा-प्रिय, देहि मे स्वपदान्तिकम ॥५॥

ओ मणिमञ्जीर, चारु तरलित, मधुर मधुर सुनादितं

अतुल रातुल, युगल पदतल, अमल कमल सुराजितम ।

तेजिया अमर, अवनी हिमकर, निताइ-पद-नख-शोभितं

जयति जय, वसु-जाह्नबा-प्रिय, देहि मे स्वपदान्तिकम ॥६॥

जांहार भये, कलि-भुजग, भागलो भेलो सभे हर्षितं

तपन=किरणे जनु, तिमिर नाशै, तैछे कमल-सुराजितम ।

दुरित-भये क्षिति, अबहि आतुर, भार तार करु नाशितं

जयति जय, वसु-जाह्नबा-प्रिय, देहि मे स्वपदान्तिकम ॥७॥

इषत हसैते, झलके दामिनी, कामिनीगण-मन-मोहितं

सो पहुं धुनी-तीरे, ना जानि कार भाबे, अबनी उपरे गिरितम ।

वचन बोलैते, अधर कम्पै, बाहु तुलि क्षणे रोदितं

जयति जय, वसु-जाह्नबा-प्रिय, देहि मे स्वपदान्तिकम ॥८॥

॥ इति श्रील कृष्णदास कविराज गोस्वामी-विरचित श्री श्री नित्यानन्द-अष्टकम सम्पूर्णम ॥

**श्री श्री अद्वैताष्टकम**

श्री श्री अद्वैत चन्द्राय नमः

1. हुहुंकार गर्जनादि अहोरात्र सद्गुणं,

हा कृष्ण राधिकानाथ प्रार्थनादि भावनं,

धूप दीप कस्तुरी च च्न्दनादि लेपनं,

सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥

1. गंगावारि मनोहारी तुलस्यादि मंजरी,

कृष्ण गान सदा ध्यान प्रेमवारि झरझरी,

कृपाब्धि करुणानाथ भविष्यति प्रार्थनं,

सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥

1. मुहुर्मुहुः कृष्ण कृष्ण उच्चैःस्वरे गायतं,

ओहे नाथ जगत्त्रातः मम दृष्टि गोचरं,

द्विभूज करुणानाथ दीयतां सुदर्शनं,

सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥

1. श्री अद्वैत प्रार्थनार्थ जगनाथ आलयं,

शचीमातुर्गर्भजात चैतन्य करुणामयं,

श्री अद्वैत संग रंग कीर्तन विलासनं,

सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥

1. अद्वैत चरणारविन्द ज्ञान ध्यान अभावनं,

सदाद्वैत पादपद्म रेणुराशि धारणं,

देहि भक्ति जगन्नाथ रक्षमाम अभाजनं,

सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥

1. सर्वदातः सीतानाथ प्राणेश्वर सद्गुणं,

ये जपन्ति सीतानाथ-पादपद्म केवलं,

दीयतां करुणानाथ भक्तियोगः तत्क्षणं,

सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥

1. श्रीचैतन्य जयाद्वैत नित्यानन्द करुणामयं,

एक अंग र्तिधा मुर्ति कैशोरादि सदा वयं,

जीवत्राण भक्ति ज्ञान हुंकारादि गर्जनं,

सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥

1. दीनहीन निन्दकादि प्रेमभक्ति दायकं,

सर्वदातः सीतनाथ शान्तिपूर नायकं,

रागरंग संगदोष कर्मयोग मोक्षणं,

सीतानाथाद्वैत चरणारविन्द भावनम ॥

॥ इति श्रील सार्वभौम भट्टाचार्य विरचितं श्री श्री अद्वैताष्टकं सम्पूर्णं ॥

# श्री ब्रजराजसुताष्टकम

1. नवनीरद निन्दित कान्तिधरं, रस सागर नागर भूप वरं,

शुभ बंकिम चारु शिखण्ड शिखं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतं ॥

1. भ्रु-विशंकित-बंकिम-शत्रुधनुं, मुख-चन्द्र-विनिन्दित-कोटि-विधुं,

मृदुमन्द-सुहास्य-सुभाष्य-युतं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतं ॥

1. सुविकम्पदनंग-सदंगधरं, ब्रजवासि-मनोहर-वेषकरं,

भृश-लांछित-नीलास्रोज-दृशं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतं ॥

1. अलकावलि-मण्डित-भालतटम, श्रुति-दोलित-माकर-कुण्डलकं,

कटिवेष्टित पीतपटं सुधटं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतं ॥

1. कल-नूपुर राजित चारु पदं, मणि-रंजित गंजित-भृंगमदं,

ध्वज-वज्र-झषांकित-पादयुगं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतं ॥

1. भृश-चन्दन-चर्चित चारु तनुं, मणि कौस्तुभ गर्हित-भानुतनुं,

ब्रजबाल-शिरोमणि-रूपधृतं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतं ॥

1. सुरवृन्द-सुवन्द्य-मुकुन्द हरिं, सुरनाथ-शिरोमणि-सर्वगुरुं,

गिरिधारि-मुरारि-पुरारि-परं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतं ॥

1. वृषभानुसुता वरकेलि परं, रसराज-शिरोमणि-वेशधरम,
2. जगदीश्वरमीश्वरमीड्यवरं, भज कृष्णनिधिं ब्रजराजसुतं ॥

॥ इति श्री ब्रजराजसुताष्टकं सम्पूर्णं ॥

**श्री श्री राधाष्टक**

1. राधिका शरद इन्दु निन्दि मुख मंडली,

कुन्तले बिचित्र बेनी चम्पक पुष्प शोभनी,

नील पट्ट अंगे शोभे ताहे आध ओढ़नी,

श्री पादपद्म बृषभानु नन्दिनी ।

1. तरुन अरुन जिनि सुन्दूरेर मण्डली,

जैछे ओलि मत्त भ्रे मलयज गण्धिनी,

भुरुरो भंगिमो कोटी कोटी काम गंजिनी,

बन्दिये श्री पादपद्म बृषभानु नन्दिनी ।

1. खंजनो-गंजनो दिठी बंकिमो सुचाहोनी,

अंजनो रंजितो ताहे कामो-शरो सन्धिनी,

तिलो-पुष्पो जिनि नासा बेसरो सुदोलनी,

बन्दिये श्री पादपद्म बृषभानु नन्दिनी ।

1. पक्क बिम्ब फलो जिनि अधरो सुरंगुनी,

दशनो दाड़िम्बो बीजो जिनि अति शोभनी,

बसन्तो कोकिलो जिनि सुमधुरो बोलनी,

बन्दिये श्री पादपद्म बृषभानु नन्दिनी ।

1. कनको मुकुरो जिनि गण्ड-जुगो शोभनी,

रतनो मंजीरो पाये बंकराजो दोलनी,

केशरो मुकुता हारो उरो परो झोलनी,

बन्दिये श्री पादपद्म बृषभानु नन्दिनी ।

1. कनको कलसो जिनि कुचजुगो शोभनी,

करिबरो करो जिनि बाहुजुग दोलनी,

सुललितो अंगुलिते मुद्रिकारो साजोनी,

बन्दिये श्री पादपद्म बृषभानु नन्दिनी ।

1. गज-अरि जिनि माजा गुरुवा नितम्बिनी,

तापरो शोभित भालो कनकेरो किंकिनी,

कनको उलटो रम्भा जानुजुगो-शोभनी,

बन्दिये श्री पादपद्म बृषभानु नन्दिनी ।

1. हंसराज गति जिनि सुमंथर चलोनी,

रातुलो चरने राजे कनया सुपंजिनी,

जुगलो चरणे शोभे जाबको सुरंजिनी,

बन्दिये श्री पादपद्म बृषभानु नन्दिनी ।

॥ इति श्रील सनातन गोस्वामि विरचित श्री श्री राधाष्टक समाप्त ॥